पीपुल्स समाचार, भोपाल
30 AUG 2010

विदेशी अपना रहे मप्र में होने वाले चने की किस्म

पीपुल्स संवाददाता, ग्वालियर

मध्यप्रदेश कृषि अनुसंधान केंद्र, ग्वालियर में तैयार होने वाली चने की जिन किस्मों को प्रदेश के किसानों ने ठुकरा दिया था, अब उन्हीं की मांग विदेशों में दिनों दिन बढ़ रही है।

इन किस्मों को प्रदेश के किसानों ने लंबे समय तक अपनाया था, लेकिन इनमें लगने वाले रोगों के चलते इनकी बोवनी बंद कर दी गई। मप्र के चने की किस्म जेजी-62 सत्तर के दशक में किसानों की पहली पसंद थी। इस किस्म के बार-बार पैदावार लिए जाने से फसल में उगटा रोग लगने लगा था। अब इसी किस्म की बोवनी से वर्मा के किसान बड़े उत्साह से कर रहे हैं। इसी तरह से जेजी-74 चने की किस्म भी इस अनुसंधान केन्द्र द्वारा विकसित की गई थी, जिसकी बुवाई प्रदेश के अंदर एक दशक तक सफलता पूर्वक हुई। जब यह किस्म रोगों की चपेट में आने लगी तो किसानों का इससे मोहभंग हो गया। अब जेजी-74 किस्म की फसल नेपाल के खेतों में लहलहा रही है।

चने की खेती करने में दिलचस्पी दिखा रहे नेपाल के लोग

अन्य प्रांतों में हो रही मांग

मप्र में चने की तैयार होने वाली किस्म जेजी-11 को कई वर्षों तक प्रदेश के किसानों ने बोया है लेकिन अब इस किस्म की बुवाई आंध्र प्रदेश के किसान कर रहे हैं। आंध्र प्रदेश के किसानों ने कुल चने के रकबा में से 70 प्रतिशत से अधिक क्षेत्रफल में इसी किस्म की बुवाई करना शुरू कर दिया है।

"मप्र में तैयार की जाने वाली चने की किस्म जेजी-62 एवं जेजी-74 की उपज में रोग लगना शुरू हो गए थे। जेजी-62 किस्म को अब वर्मा के किसान लगा रहे हैं व जेजी-74 को नेपाल ने अपनाया है। दोनों ही देशों के किसान मप्र के चने की किस्म को अपनाने में विशेष उत्साह दिखा रहे हैं।

-डॉ. एचएस यादव, निदेशक, अनुसंधान केंद्र, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विवि